भारत में नगरीय समाज

(Urban Society in India)

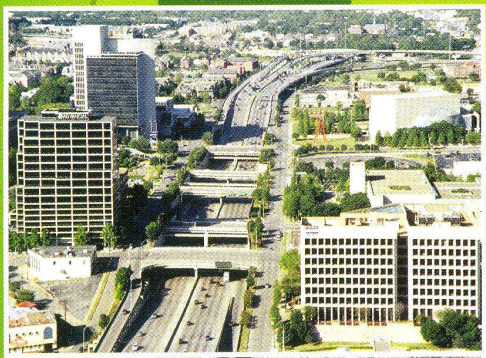

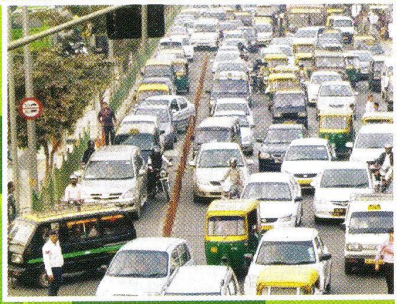

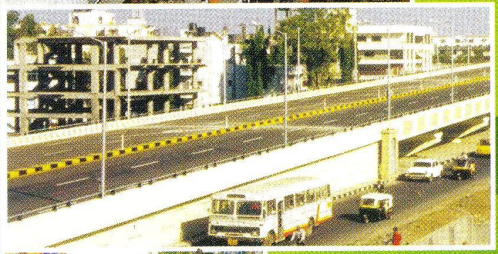

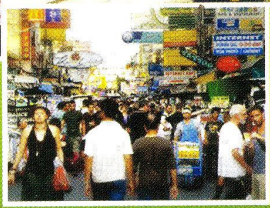

रीया खत्री

कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल

भारत में नगरीय समाज
(Urban Society in India)

लेखक

रीया खत्री

एम.ए., एम.फिल., बी.एड.,

कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल

दो शब्द

आधुनिक युग में समाजशास्त्र की अनेक शाखाओं का अध्ययन शुरू हो चुका है। इसमें समाजशास्त्र की विशेषतः वह शाखा जिसमें मुख्यतः नगरीय जीवन, संस्थाओं, समस्याओं आदि का विस्तृत अध्ययन किया जाता है उसे नगरीय समाजशास्त्र कहते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में **''नगरीय समाजशास्त्र''** का अर्थ, क्षेत्र, अवधारणाएँ, महत्व, अन्य विषयों से संबंध, नगरीय समुदाय, नगरीय समाज, नगरीय केन्द्रों, कस्बा, नगर और महानगर भारतीय नगर और उनका विकास, प्रवास, निर्धनता, पर्यावरणीय समस्याएँ, नगर नियोजन, परिवर्तित व्यवसायिक व सामाजिक ढाँचा, मादक पदार्थ, भारतीय नगरों में बेरोजगारी, राजनीति शैक्षणिक केन्द्रों, मीडिया, कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी की विस्तृत विवेचना की गई है।

इस पुस्तक की रचना में जिन भारतीय व विदेशी विद्वानों की रचनाओं, लेखों, चित्रों एवं अभिमतों का सहारा लिया गया है, उन सबका मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, क्योंकि उनके विचारों को विषय की विचारधारा में जोड़े बिना विद्यार्थियों को विषय विवेचन का ज्ञान कराना असंभव था। पुस्तक को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी एवं श्रेष्ठ बनाने के लिये पूरा प्रयास किया गया है। इस हेतु सरल और सुबोध भाषा-शैली का प्रयोग कर विषय की गहराई को ध्यान में रखते हुए नवीन अवधारणाओं एवं प्रवृत्तियों की यथास्थान स्पष्ट विवेचना की गई है।

प्रस्तुत पुस्तक को यूनीफाइड रूप में प्रस्तुत करने का एकमात्र उद्देश्य यही है कि विद्यार्थियों को उच्च स्तर की बिखरी हुई सामग्री अलग-अलग पुस्तकों की अपेक्षा एक ही पुस्तक में उपलब्ध हो जाए। पुस्तक की भाषा सरल, शैली रोचक एवं बोधगम्य है; ताकि हिन्दी माध्यम से परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को यह विषय कठिन प्रतीत न हो।

आशा है वर्तमान स्वरूप में यह पुस्तक विद्यार्थियों की इस विषय से संबंधित सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकेगी। पुस्तक के कलेवर को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु पाठकों के सुझावों का हम हृदय से स्वागत करेंगे।

• रीया खत्री

पाठ्यक्रम

भारत में नगरीय समाज : I

UNIT-I **Urban Sociology :** (a) Concept of Urban Sociology and importance of Urban Study, (b) Urban Community and Spatial dimensions, (c) Changing Urban society.

UNIT-II **Urban Society in India :** (a) Urban Society in India, (b) Emerging trends and factors of Urbanization.

UNIT-III (a) Classification of Urban centers : Cities and Town,
(b) Indian city and its growth.

UNIT-IV **Urban social structure and problems :** (a) Changing occupation structure and its impact on social stratification-Family, Caste & Class. (b) Migration and Poverty, (c) Urban Environmental Problems.

UNIT-V **Town planning :** (a) Factors affecting Urban Planning, (b) Urban Planning-meaning and agencies, (c) Problems of Urban management in India.

भारत में नगरीय समाज : II

UNIT-I Changing occupational structure and its impact on social stratification-Caste, Class and Gender and Family.

UNIT-II Indian city and its growth, megapolis, problems and housing, slum development, urban environment problems, urban poverty.

UNIT-III Difference between town, city, metropolis and megapolis. Sociological studies in Indian cities : Chandigarh, Jaipur and Ahemadnagar.

UNIT-IV Problems of Urban cities : Poverty, Crime, Alcoholism, Drug-abuse, Migration, Problems of housing, Environmental pollution.

UNIT-V Politics in Indian cities : Educational centres in Urban India. The role of mass-media, computer and IT in Urban centers.

●●●

अनुक्रमणिका

1. नगरीय समाजशास्त्र : अर्थ एवं क्षेत्र 01
(Urban Sociology : Concept and Scope)

2. नगरीय समाजशास्त्र की अवधारणाएँ 11
(Concepts of Urban Sociology)

3. भारत में नगरीय समाजशास्त्र का महत्व एवं अन्य विषयों से संबंध 17
(Importance of Urban Sociology in India and relation with other Subjects)

4. नगरीय समुदाय तथा स्थानीय आयाम 23
(Urban Community and Spatial Dimensions)

5. नगरीय समाज में परिवर्तन 27
(Change in Urban Society)

6. भारत में नगरीय समाज 42
(Urban Society in India)

7. नगरीकरण की उभरती प्रवृत्तियाँ एवं कारक 50
(Emerging trends and Factors of Urbanization)

8. नगरीय केन्द्रों का वर्गीकरण : कस्बा, नगर और महानगर 54
(Classification of Urban Centers : Cities, Towns and Metropolis)

9. भारतीय नगर और उनका विकास 61
(Indian Cities and their growth)

10. नगरीयकरण : अर्थ, प्रारूप और प्रकृति 67
(Urbanization : Meaning, Format and Nature)

11. समसामयिक नगरीय मुद्दे 85
(Contemporary Urban Issues)

12. नगरीय प्रवास 94
(Urban Migration)

13. नगरीय निर्धनता 109
(Urban Poverty)

14. नगरों में पर्यावरण की समस्याएँ 118
(Urban Environmental Problems)

15. नगर नियोजन 130
(Town Planning)

16. नगर नियोजन के अभिकरण 140
(Agencies of Town Planning)

17. भारत में नगर नियोजन की समस्याएँ 146
(Problems of Urban Management in India)

18. बदलता व्यवसायिक नगरीय ढाँचा : जाति, वर्ग, लिंग व परिवार 162
(Changing Occupational Urban Structure : Caste, Class, Gender and Family)

19. भारतीय नगरों की समस्याएँ : आवास एवं मलिन बस्तियाँ 208
(Problems of Indian Cities : Housing and Slum)

20. भारतीय नगरों की समस्याएँ : भिक्षावृत्ति, नौकरशाही व भ्रष्टाचार 231
(Problems of Indian Cities : Beggary, Bureaucracy and Corrpution)

21. नगरीय विकास 238
(Urban Development)

22. आधुनिक नगरों की समस्याएँ 251
(Problems of Modern Cities)

23. नगरीय समस्याएँ : मदिरा, मादक द्रव्य एवं वैश्यावृत्ति 257
(Urban Problems : Alcoholism, Drug-Abuse and Prostitution)

24. नगरीय समस्या : बेरोजगारी 271
(Urban Problems : Unemployment)

25. भारतीय नगरों में राजनीति 281
(Politics in Indian Cities)

26. नगरीय भारत में शैक्षणिक केन्द्र 286
(Educational Centers in Urban India)

27. नगरों में मीडिया, कम्प्यूटरों एवं सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका 290
(The Role of Media, Computers and Info-Tech in Urban Cities)

●●●

भारत में नगरीय समाज
(Urban Society in India)

1

नगरीय समाजशास्त्र : अर्थ एवं क्षेत्र
(URBAN SOCIOLOGY : CONCEPT & SCOPE)

अरस्तू के अनुसार ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।'' अर्थात मनुष्य का विकास व वृद्धि समाज में रहकर ही संभव है। प्रत्येक मनुष्य समाज के विभिन्न समूहों के साथ शहरी, ग्रामीण, नगरीय एवं महानगरीय पर्यावरण में रहता है। जिस पर्यावरण में मनुष्य रहता है उस पर्यावरण का प्रभाव उसके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक जीवन पर पड़ता है। मानव के इसी सामाजिक व्यवहार गतिविधियों का अध्ययन समाजशास्त्र में किया जाता है।

समाजशास्त्र का प्रारम्भ (Begining of Sociology)

1838 में ऑगस्ट कॉम्टे द्वारा पहली बार प्रयुक्त किया गया शब्द ''सोसियालॉजी'' (Sociology) आज अत्यन्त ही लोकप्रिय एवं व्यापक हो गया है। एक विषय का स्वरूप ग्रहण कर चुका है। विश्व के हर देश में अत्यन्त ही रुचि के साथ इस विषय में अध्ययन और अध्यापन तथा शोध हो रहा है। आज का युग विशेषीकरण का है। इसका प्रभाव समाजशास्त्र पर भी पड़ा है इसके चलते समाजशास्त्र की अनेक शाखाओं की उत्पत्ति हुई है नगरीय समाजशास्त्र उनमें से प्रमुख है। नगरीय समाजशास्त्र, समाजशास्त्र की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत नगरीय जीवन और समाज का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। समकालीन विश्व में सभ्यता का स्वरूप नगरीय होता जा रहा है। दूसरे शब्दों में आधुनिक सभ्यता और नगरीय सभ्यता पर्याय जैसी हो गये हैं। सही तथ्य तो यह है कि नगरीयता का फैलाव एक जीवन शैली के रूप में हुआ है। अतः नगरीय जीवन की विशेषतायें छोटे-छोटे कस्बों और गाँवों में तीव्र गति से फैल रही हैं। यह एक वैश्विक परिघटना के रूप में उभरी है तथा एक प्रक्रिया का रूप धारण कर चुकी है। यह प्रक्रिया विश्व के सभी देशों एवं संभागों में क्रियाशील है। यही कारण है कि नगरीय समाजशास्त्र वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरा है इसीलिये नगरीय समाजशास्त्र के अध्ययन में विद्वानों की रुचि दिनों-दिन बढ़ती जा रही है।

नगरीय समाजशास्त्र की परिभाषा
(Definition of Urban Sociology)

वह विज्ञान जिसमें नगरों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है उसे नगरीय समाजशास्त्र कहते हैं।

इस शास्त्र की मुख्य विषय वस्तु है नगरीय पर्यावरण में पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करना। इसके अन्तर्गत नगरीय जीवन का क्रमबद्ध और व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है। अनेक विद्वानों ने नगरीय समाजशास्त्र की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं—

1. **बर्गेल** के अनुसार**:-** नगरीय समाजविज्ञान पर्यावरण का व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का विशेष अध्ययन है।

जीवन चाहे ग्रामीण हो या नगरीय, पर्यावरण से यह अवश्य ही प्रभावित होता है। जब नगरीय जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को व्यवस्थित रूप से जानकारी के योग्य बना दिया जाता है तो इसे नगरीय समाजविज्ञान के नाम से जाना जाता है।

2. **नेल्स एंडरसन** के अनुसार**:-** मुख्य रूप से ग्रामीण तथा नगरीय, दो प्रकार के सामुदायिक समाजशास्त्र हैं और प्रत्येक को उसके अनुशासन से जाना जाता है। ग्रामीण समाजशास्त्र का क्षेत्र ग्रामीण समाज है, जबकि नगरीय समाजशास्त्र का सम्बन्ध कस्बों तथा नगरों से है।

3. **हाबहाउस** के अनुसार**:-** नगरीय समाजशास्त्र नगर के जीवन और समस्याओं का विशिष्ट अध्ययन है।

4. **इरिक्सन** के अनुसार**:-** एक समाजवैज्ञानिक के रूप में वह (नगरीय समाजशास्त्री) उस सम्पूर्ण जटिल परिस्थिति एवं उन अन्तःसम्बन्धों में रुचि रखता है, जो नगरीय सामाजिक जीवन का निर्माण करता है। वह किसी एक पक्ष में नहीं बल्कि नगरीय सामाजिक संसार के प्रत्येक अंग की विवेचना करता है।

5. **लॉरी नेल्सन** के अनुसार**:–** ''नगरीय समाजविज्ञान, नगरीय पर्यावरण में मनुष्यों के तथा नगरीय समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन है।''

नेल्सन की परिभाषा में नगरीय, समाजविज्ञान के अन्तर्गत निम्नलिखित दो तत्वों को सम्मिलित किया गया हैः

(a) नगरीय समाजविज्ञान, नगरीय पर्यावरण के अध्ययन से सम्बन्धित है, और

(b) इस पर्यावरण में निवास करने वाले मनुष्यों तथा समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन नगरीय समाजविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है।

6. **डब्ल्यू. ब्राइस** के अनुसार - ''नगरों का अध्ययन व उससे सम्बंधित विभिन्न समस्याओं का अध्ययन समाजशास्त्र की एक नवीन एवं महत्वपूर्ण शाखा नगरीय समाजशास्त्र में किया जाता है। ये नगरीय समस्याएँ मानवीय समस्याएँ हैं और इनका हल मनुष्य के द्वारा मानवीय ढंग से ही होना चाहिए।''

7. **लुईसवर्थ** के अनुसार - ''नगरवाद एक विशेष प्रकार की जीवन पद्धति को कहते हैं।'' इस नगरवाद का प्रसार नगरीकरण की प्रक्रिया के कारण देखा जा सकता है। नगरीकरण वे सभी सुविधाएँ उपलब्ध करवाता है जो मशीनीकरण व औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप नगर व कस्बों में उपलब्ध तथा गावों में दुर्लभ होती हैं।

इस प्रकार नगरीकरण की प्रक्रिया को संक्षेप में नगरीय समाजविज्ञान की परिभाषा ''नगरीय समाज के सम्पूर्ण अध्ययन'' के रूप में देखा जा सकता है। नगरीय समाज के लोगों का व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन करने वाले विषय को हम नगरीय समाजविज्ञान के तौर पर अध्ययन करते हैं। निष्कर्षरूप में ऐसा भी कहा जा सकता है कि नगरवाद या नगरीय जीवन पद्धति को या इसके प्रकार की प्रक्रिया के अध्ययन को नगरीय समाजशास्त्र कहते हैं।

19वीं शताब्दी में नगरीय समाजशास्त्र
(Urban Sociology in 19th Century)

नगरीय समाजशास्त्र का उद्भव 19वीं शताब्दी में हुआ। नगरों में बढ़ती सामाजिक समस्याओं ने अनेक देशों को, नगरों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिये प्रोत्साहित किया। अमेरिका व यूरोप इसमें सबसे आगे रहे, क्योंकि यहाँ अप्रवास के कारण नगरों की संख्या और जनसंख्या दोनों में तीव्र गति से वृद्धि हुई। मैक्स फेबर ने अपने अध्ययन में नगरों की उत्पत्ति एवं विकास की विस्तार से व्याख्या की है जिसका प्रमुख उद्देश्य अप्रवास एवं मृत्यु दर का अध्ययन करना था। इस प्रकार निष्कर्षस्वरूप कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र की एक विशेष शाखा के रूप में नगरीय समाजशास्त्र इतिहास एवं अन्य सामाजिक विज्ञानों से सहायता लेता है। अतः नगरीय समाजशास्त्र का सम्बंध अर्थशास्त्र, सामाजिक मनोविज्ञान, राजनीतिशास्त्र, मानवशास्त्र, वाणिज्य प्रबंध, जनाँकिकी, समाजकार्य, अपराधशास्त्र आदि से है। नगरों का भौतिक एवं सामाजिक नियोजन, सार्वजनिक आवास विकास, गन्दी बस्तियाँ और उनकी समस्याएँ, यातायात एवं परिवहन, सफाई, जल आपूर्ति, भवन निर्माण नियम, विद्युत आपूर्ति, शिक्षा व्यवस्था, न्यायालय, बन्दरगाह, हवाई अड्डा,

अग्निशमन केन्द्र आदि सभी का अध्ययन नगरीय समाजशास्त्र के अन्तर्गत आता है। इसीलिये नगरीय समाजशास्त्री तथ्य संकलन में न्यायशास्त्र, अपराधशास्त्र, औषधि विज्ञान, आरोग्यशास्त्र, वास्तुकला, नगर नियोजन, अभियन्त्रणशास्त्र आदि से सहायता लेता है।

इस प्रकार नगरीय समाजशास्त्र का अध्ययन प्रत्येक व्यक्ति, समाज, क्षेत्र व समूह संगठन, देश आदि के लिये अतिआवश्यक व लाभदायक है।

नगरीय समाजशास्त्र की विशेषताएँ (Characteristics of Urban Sociology)

नगरीय समाजशास्त्र अध्ययन की दृष्टि से वैज्ञानिक पद्धति का विषय है इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

1. **नगरीय समाजशास्त्र एक विज्ञान है :** नगरीय समाजशास्त्र किसी भी विज्ञान की तरह व्यवस्थित और क्रमबद्ध ज्ञान है। नगरीय समाजशास्त्र नगरीय जीवन और समाज का व्यवस्थित ढंग से अध्ययन करता है, अतः इसे एक विज्ञान कहा जाता है।

2. **भविष्यवाणी सम्भव है :** इस विज्ञान में सिद्धांतों का निर्माण वैज्ञानिक विधि से एकत्रित एवं विश्लेषित आंकड़ों द्वारा होता है इसलिये नगरीय समाजशास्त्र में भी भविष्यवाणी सम्भव है।

3. **नगरीय समाजशास्त्र के सिद्धांत कार्य-करण सम्बंधों पर आधारित हैं :** सामाजिक जीवन की घटनाएं चमत्कारिक रूप से अचानक होने वाली नहीं होती अपितु उनके पीछे भी कुछ विशिष्ट कारण होते हैं। नगरीय समाजशास्त्र इन्हीं कार्य-करण का अध्ययन करता है।

4. **नगरीय समाजशास्त्र तथ्यों का अध्ययन है:** इस विज्ञान में घटनाएँ और सामाजिक परिस्थितियाँ जिस रूप में हैं, समाज में जो तथ्य जिस रूप में पाए जाते हैं, उनका ठीक उसी रूप में अध्ययन किया जाता है।

5. **अध्ययन में वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग करता है :** नगरीय समाजशास्त्र में अब तक जो भी अनुसंधान हुए है और जो किये जा रहे है उन सबका आधार वैज्ञानिक विधियाँ हैं, अतः नगरीय समाजशास्त्र में जो अवधारणायें अब तक बनी हैं वे सार्वभौमिक हैं। नगरीय समाजशास्त्र में काम में ली जाने वाली मुख्य विधियाँ हैं- अवलोकन, वैयक्तिक जीवन अध्ययन पद्धति, सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति, सामुदायिक अध्ययन पद्धति, प्रयोगात्मक एवं समाजमिति पद्धति आदि हैं।

6. **नगरीय समाजशास्त्र के सिद्धांतों की परीक्षा सम्भव है:** सभी निर्मित सिद्धांतों की परीक्षा सम्भव है यदि परिस्थितियों में बदलाव न किया जाए तो इसके सिद्धांत प्राकृतिक विज्ञानों की तरह सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक होते हैं।

नगरीय समाजशास्त्र की समस्यायें (Limitations of Urban Socilogy)

1. नगरीय समाजशास्त्र एक प्रयोगशाला के तौर पर है, लेकिन परिस्थितियों को नियंत्रित करके परिणामों को पाने वाली बात जो प्रयोगशाला में सम्भव है, वह एक समाज वैज्ञानिक हेतु इस वृहद प्रयोगशाला में सम्भव नहीं है।

2. इस विज्ञान में सुनिश्चित रूप से भविष्यवाणी कर पाना संभव होता नहीं है क्योंकि समाज परिवर्तनशील है। जब तक नगरीय समाज की घटनाएँ परिवर्तित होती रहेंगी तब तक परिवर्तित परिस्थितियों में पुनर्परिवर्तन की संभाव्यता के कारण सही भविष्यवाणी कर सकना काफी कठिन होगा।

3. विज्ञान की पूर्णता हेतु तथ्यों का माप आवश्यक है। नगरीय समाजशास्त्र में प्राकृतिक विज्ञानों की तरह घटनाओं का माप सम्भव नहीं है। सामाजिक घटनायें इतनी जटिल होती हैं कि इनके लिये पैमाना बनाना तभी सम्भव है जब हमारा ज्ञान काफी सूक्ष्म एवं वृहत् स्तर पर हो। सामाजिक घटनाओं की जटिलता के कारण सामाजिक तथ्यों की माप पूरी तरह अभी सम्भव नहीं है।

Login | Register

Kopykitab
Same textbooks, klick away

Search by Title / Author / ISBN / Descri

PRODUCT NOT FOUND!

Product not found!

continue

School Books

Oswaal Books
Class 9th Books
Class 10th Books
Class 11th Books
Class 12th Books

Engineering Books

RGPV Books & Notes
VTU Books & Notes
Free Engineering Books
Information Technology Books
Electrical Engineering Books

Competitive Exams

Bank PO Exam

Gate Books
Teaching Exams Books
AIEEE-NIT-JEE MAINS Books
UPSC Books

Professional Courses

ICSI Books & Study Materials
Chartered Accountant Books
Company Secretary Books
ICSI 7 days Trial
Latest Scanners

About KopyKitab.com

Kopykitab is India's 1st digital & multiple publishers platform. Kopykitab has largest collection of e-textbooks & branded digital content in Higher & School education. We have strong foundation of leading publishers & tutorials as content partners.

We offer e-textbook, Test Preparation, Notes & LMS for various curriculam to Students, Professionals & Institutes. These are same textbooks, way smarter. Our goal is to make education affordable & accessible.
A user can access the content in all electronic devices e.g. Mobile, PC & Tabs

Information

About Us
FAQ
Privacy Policy
Terms & Conditions
Payment Information

Links

ICSI eLibrary
KopyKitab eBook Reader
Contact Us
Site Map

My Account

Refer & Earn
My Account
Order History
Wish List
Newsletter
My Library
Office 365 Email Login
Google Login

Verified By

©2016 DigiBook Technologies (P) Ltd, All Rights Reserved. An ISO 9001:2008 Certified Company